राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • बृहस्पतिवार • 6 जुलाई • 2023

असिंचित क्षेत्र के लिये रदान है 'सांवा' की खेती

ुर (एसएनबी)। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक जिेश राय ने किसानों को सलाह दी कि वह ंचत क्षेत्र यानी जहां सिंचाई की सुविधाएं कम हों, मीन पर मोटे अनाज 'सांवा' की खेती आसानी से सकती है। सांवा एक प्राचीन फसल है, जो मनुष्यों ाशुओं दोनों के काम आती है।

ॉ. राजेश राय ने बताया कि असिंचित क्षेत्रों में बोई ाले मोटे अनाज में सांवा का महत्वपूर्ण स्थान है। ारत की एक प्राचीन फसल है, जो सामान्यतः ंचत क्षेत्र में बोई जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल ामें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम े और हल्की नम व ऊष्ण जलवायु इसके लिये म है। उन्होंने बताया कि आमतौर पर सांवा का ा चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में खीर बड़े चाव से खायी जाती है। इसका हरा चारा ं को पसंद है। इसमें चावल की तुलना में अधिक तत्व पाये जाते हैं। उन्होंने बताया कि सांवा में से दोगुना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना रेशा, 8 ौह तत्व, 1.5 गुना कैल्शियम और दोगुनी मात्रा में ारस पाया जाता है। सांवा की फसल आमतौर पर ापजाऊ मिट्टी में बोई जाती है। इसके लिये बलुई व दोमट मिट्टी, जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व र्वाधिक उपयुक्त है। सांवा की बुवाई का सबसे त समय जुलाई का अंतिम सप्ताह तक है।

असिंचित क्षेत्रों में मोटे अनाज "सांवा" की वैज्ञानिक खेती

डीटीएनएन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में 5 जुलाई को विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि असिंचित क्षेत्रों में बोयी जाने वाली मोटे अनाजों में साँवा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की एक प्राचीन फसल है। यह सामान्यतया असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है। हल्की नम व ऊष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि सामान्यतया साँवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में साँवा की ॼखीरॼ बड़े चाव से खायी जाती है। इसका हरा चारा पशुओं को बहुत पसन्द है। इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषण तत्व पाये जाते हैं।डॉ राय ने बताया कि सावां में चावल से दूना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना रेशा , 8 गुना लौह तत्व, 1.5 गुना कैल्सियम और दूनी मात्रा मे फास्फोरस पाया जाता है 7 उन्होंने बताया कि सामान्यता यह फसल कम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोयी जाती है। परन्तु इसके लिए बलुई दोमट व दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व हो, सर्वाधिक उपयुक्त है। डॉ राजेश राय ने बताया कि साँवा की बुवाई की उत्तम समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है। मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए। इसके बुवाई छिटकावाँ विधि से या कूड़ों में 3-4 सेमी. की गहराई में की जाती है। उन्होंने बताया कि इस का बीज प्रति हेक्टेयर 8 से 10 किग्रा. गुणवत्तायुक्त बीज पर्याप्त होता है। इस की उन्नतशील प्रजातियां टी-46, आई पी-149, यू पी टी-8, आई पी एम 97, आई पी एम 100, प्रमुख हैं उन्होंने बताया इस फसल के लिए खाद एवं उर्वरक का प्रयोग 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद खेत में मानसून के बाद पहली जुताई के समय मिलाना लाभकारी होता है। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश की मात्रा 40ः20ः20ः किग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुपात में प्रयोग करने से उत्पादन परिणाम बेहतर प्राप्त हो जाते हैं उन्होंने कहा कि जब वर्षा लम्बे समय तक रुक गयी हो, तो पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक हो जाती है।

खरपतवार नियंत्रण बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए। निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ो में आक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों को देती हैं। सामान्यतया दो निराई-गुड़ाईः 15-15 दिवस के अन्तराल पर पर्याप्त है।

सीएसए के प्रोफेसर डॉ राजेश राय ने मोटे अनाज साँवा के बारे में जानकारी

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ.राजेश राय ने बीते दिन बुधवार को मोटे अनाज में साँवा के महत्वपूर्ण स्थान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है। इसका उपयोग सामान्यतया चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में साँवा की ÷खीर÷ बड़े चाव से खायी जाती है व इसका हरा चारा पशुओं को बहुत पसन्द है। उन्होंने बताया कि इस फसल के लिए खाद एवं उर्वरक का प्रयोग 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर के साथ कम्पोस्ट खाद खेत में मानसून के बाद पहली जुताई के समय मिलाना लाभकारी होता है। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश की मात्रा 40:20:20 किग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुपात में प्रयोग करने से उत्पादन परिणाम बेहतर प्राप्त हो जाते हैं उन्होंने कहा कि जब वर्षा लम्बे समय तक रूक गयी हो, तो पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक हो जाती है। उन्होंने इसकी दो निराई-गुड़ाई 15-15 दिवस के अन्तराल पर करने की सलाह दी।

साँवा के लिए बलुई दोमट व दोमट मिट्टी उपयुक्त

डॉ.राय ने बताया कि साँवा में चावल की तुलना में दो गुना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना रेशा , 8 गुना लौह तत्व, 1.5 गुना कैल्सियम और दो गुना मात्रा मे फास्फोरस पाया जाता है 7 इसके लिए पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व मौजूद बलुई दोमट व दोमट मिट्टी उपयुक्त है। तथा इसकी बुवाई की उत्तम समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है। उन्होंने बताया कि साँवा की उन्नतशील प्रजातियां टी-46, आई पी-149, यू पी टी-8, आई पी एम 97, आई पी एम 100 हैं।

हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

वर्ष : 12 ● अंक 66 ● कानपुर, गुरूवार 6 जुलाई 2023 ▪ पृष्ठ: 8 ▪ मूल्य: 2.0

असिंचित क्षेत्रों में मोटे अनाज सांवा का महत्वपूर्ण स्थान

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर-सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में 05 जुलाई को विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि असिंचित क्षेत्रों में बोयी जाने वाली मोटे अनाजों में साँवा का महत्वपूर्ण स्थान है यह भारत की एक प्राचीन फसल है यह सामान्यतया असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है हल्की नम व ऊष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि सामान्यतया साँवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है उत्तर भारत में साँवा की 卐खीर卐 बड़े चाव से खायी जाती है इसका हरा चारा पशुओं को बहुत पसन्द है इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषण तत्व पाये जाते हैं डॉ राय ने बताया कि सावां में चावल से दूना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना रेशा , 8 गुना लौह तत्व, 1.5 गुना कैल्सियम और दूनी मात्रा मे फास्फोरस पाया जाता है उन्होंने बताया कि सामान्यता यह फसल कम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोयी जाती है परन्तु इसके लिए बलुई दोमट व दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व हो, सर्वाधिक उपयुक्त है डॉ राजेश राय ने बताया कि साँवा की बुवाई की उत्तम समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए इसके बुवाई छिटकावाँ विधि से या कूड़ों में 3-4 सेमी. की गहराई में की जाती है उन्होंने बताया कि इस का बीज प्रति हेक्टेयर 8 से 10 किग्रा. गुणवत्तायुक्त बीज पर्याप्त होता है इस की उन्नतशील प्रजातियां टी-46, आई पी-149, यूपीटी-8, आईपीएम 97, आईपीएम 100, प्रमुख हैं उन्होंने बताया इस फसल के लिए खाद एवं उर्वरक का प्रयोग 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद खेत में मानसून के बाद पहली जुताई के समय मिलाना लाभकारी होता है नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश की मात्रा 40-20-20-किग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुपात में प्रयोग करने से उत्पादन परिणाम बेहतर प्राप्त हो जाते हैं उन्होंने कहा कि जब वर्षा लम्बे समय तक रूक गयी हो, तो पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक हो जाती है खरपतवार नियंत्रण बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए। निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ो में आक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों की देती हैं सामान्यतया दो निराई-गुड़ाई- 15-15 दिवस के अन्तराल पर पर्याप्त है।

पौधरोपण

दौरान सचिव शैलेन्द्र गोस्वामी ने बताया की पतारा ग्राम पंचायत मे इस बार दो हजार पे? लगाने का लक्ष्य है उन्होंने बताया की जो व्यक्ति पे? लगाना चाहता

उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र,गुजरात,संघ प्रदेश,से एक साथ प्रसारित
RNI NO - UTTHIN/2018/76731
हिन्दी दैनिक
गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर
दि ग्राम टुडे
सूर्योदय: 05:15 बजे
सूर्यास्त: 06:47 बजे
गुरूवार , 06 जुलाई 2023
वर्ष: 05 अंक: 329
पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये
Email : thegramtodayeditor@gmail.com

मिश्रा,हरि स्वरूप निगम उनके परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

असिंचित क्षेत्रों में मोटे अनाज "सांवा"की करे वैज्ञानिक खेती.. डॉ राजेश राय

दि ग्राम टुडे, कानपुर।(सूर्यनारायण)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज दिनांक 05 जुलाई 2023 को विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि असिंचित क्षेत्रों में बोयी जाने वाली मोटे अनाजों में साँवा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की एक प्राचीन फसल है। यह सामान्यतया असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है। हल्की नम व ऊष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि सामान्यतया साँवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में साँवा की ह्लखीरह्व बड़े चाव से खायी जाती है। इसका हरा चारा पशुओं को बहुत पसन्द है। इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषण तत्व पाये जाते हैं।डॉ राय ने बताया कि सावां में चावल से दूना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना रेशा , 8 गुना लौह तत्व, 1.5 गुना कैल्सियम और दूनी मात्रा मे फास्फोरस पाया जाता है उन्होंने बताया कि सामान्यता यह फसल कम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोयी जाती है। परन्तु इसके लिए बलुई दोमट व दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व हो, सर्वाधिक उपयुक्त है। डॉ राजेश राय ने बताया कि साँवा की बुवाई की उत्तम समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है। मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए।इसके बुवाई छिटकावाँ विधि से या कूड़ों में 3-4 सेमी. की गहराई में की जाती है। उन्होंने बताया कि इस का बीज प्रति हेक्टेयर 8 से 10 किग्रा. गुणवत्तायुक्त बीज पर्याप्त होता है। इस की उन्नतशील प्रजातियां टी-46, आई पी-149, यू पी टी-8, आई पी एम 97, आई पी एम 100, प्रमुख हैं उन्होंने बताया इस फसल के लिए खाद एवं उर्वरक का प्रयोग 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद खेत में मानसून के बाद पहली जुताई के समय मिलाना लाभकारी होता है। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश की मात्रा 40:20:20: किग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुपात में प्रयोग करने से उत्पादन परिणाम बेहतर प्राप्त हो जाते हैं उन्होंने कहा कि जब वर्षा लम्बे समय तक रूक गयी हो, तो पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक हो जाती है। खरपतवार नियंत्रण बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए। निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ो में आक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों की देती हैं। सामान्यतया दो निराई-गुड़ाईः 15-15 दिवस के अन्तराल पर पर्याप्त है।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 08 कानपुर, गुरुवार 06 जुलाई 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

असिंचित क्षेत्रों में मोटे अनाज सांवा का महत्वपूर्ण स्थान :डॉ राजेश राय

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में 05 जुलाई को विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि असिंचित क्षेत्रों में बोयी जाने वाली मोटे अनाजों में साँवा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की एक प्राचीन फसल है। यह सामान्यतया असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है। हल्की नम व ऊष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि सामान्यतया साँवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में साँवा की 卐खीर卐 बड़े चाव से खायी जाती है। इसका हरा चारा पशुओं को बहुत पसन्द है। इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषण तत्व पाये जाते हैं।डॉ राय ने बताया कि सावां में चावल से दूना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना रेशा , 8 गुना लौह तत्व, 1.5 गुना कैल्सियम और दूनी मात्रा मे फास्फोरस पाया जाता है उन्होंने बताया कि सामान्यता यह फसल कम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोयी जाती है। परन्तु इसके लिए बलुई दोमट व दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व हो,

सर्वाधिक उपयुक्त है। डॉ राजेश राय ने बताया कि साँवा की बुवाई की उत्तम समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है। मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए। इसके बुवाई छिटकावाँ विधि से या कूड़ों में 3-4 सेमी. की गहराई में की जाती है। उन्होंने बताया कि इस का बीज प्रति हेक्टेयर 8 से 10 किग्रा. गुणवत्तायुक्त बीज पर्याप्त होता है। इस की उन्नतशील प्रजातियां टी-46, आई पी-149, यू पी टी-8, आई पी एम 97, आई पी एम 100, प्रमुख हैं उन्होंने बताया इस फसल के लिए खाद एवं उर्वरक का प्रयोग 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद खेत में मानसून के बाद पहली जुताई के समय मिलाना लाभकारी होता है। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश की मात्रा 40-20-20- किग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुपात में प्रयोग करने से उत्पादन परिणाम बेहतर प्राप्त हो जाते हैं उन्होंने कहा कि जब वर्षा लम्बे समय तक रूक गयी हो, तो पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक हो जाती है। खरपतवार नियंत्रण बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए। निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ो में आक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों की देती हैं। सामान्यतया दो निराई-गुड़ाई- 15-15 दिवस के अन्तराल पर पर्याप्त है।